# प्रश्नों से पार एपीसोड 1

प्रश्न 1 का उत्तर :- शायद आप तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप को ठीक से समझे नहीं, या फिर अपनी क्षमता और योग्यताओं को पहचाने नहीं। दूसरा यह भावना और विवेक के असंतुलन का परिणाम है। और कई ऐसे अब भी हैं जो योग सिखाते हैं लेकिन योग का अनुभव नहीं है। वर्णन करते हैं योग किसको कहा जाता है, योग से यह प्राप्ति होती है, लेकिन योगी जीवन किसको कहा जाता है, उसका अनुभव बहुत अल्पकाल का है। तीसरा आप अभी तक अथक नहीं बने हैं।

प्रश्न 2 का उत्तर :- पवित्रता के बारे में अव्यक्त बापदादा के महावाक्य नोट करके अपने पास रखें और उसे बीच-बीच में रिवाइज करते रहे और इसके फायदे और नुकसान के बारे में भी बाबा ने बताई हुई है जैसे धर्मराज की सजा...। दूसरा खान-पान, संगदोष, रहन-सहन पर विशेष अटेन्शन हो माना इसमें जरा भी अशुद्धि तो क्या साधारणता भी न हो। इसके लिए एक स्लोगन याद रखें न बुरा सोचना है, न बुरा देखना है, न बुरा सुनना/सुनाना है, न बुरा बोलना है, न बुरा करना है - यह जैसे कि एक व्रत के रूप में इसे पक्का कर लेना है। फिर बाबा को दिल से याद करते रहें, इसे बढ़ाते रहे तो मन बुद्धि में बाबा और बाबा की बाते ही घुमते रहे तो सम्भव है।

प्रश्न 3 का उत्तर :- ड्रामा कहते, लेकिन ड्रामा के रहस्य को जान ड्रामा के आधार पर जीवन में अनुभव करना वह बहुत आत्माओं का बहुत कम है। ड्रामा बड़ा कायदे से चलता है, इसलिए दिल और दिमाग से काम लेना चाहिए। क्योंकि इस ड्रामा में कोई भूल हो नहीं सकती है। इसलिए पुरुषार्थ का बड़ा भारी महत्व है, जो भाग्य के भरोसे रह जाते हैं वे कुछ नहीं कर पाते और पुरुषार्थ पर भरोसा करने वाला व्यक्ति असम्भव को भी संभव बना लेता है। इसलिए समझदार व्यक्ति पुरुषार्थ पर जोर देता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में इतना पात्रता और अर्हता पैदा करे कि उसे आशीर्वाद मांगना न पड़े, लेकिन आशीर्वाद देने वाला स्वयं आए। ऐसा तभी संभव होता है जब व्यक्ति का पुरुषार्थ प्रखर होता है। जो केवल भाग्य या वरदान के भरोसे रहते हैं वे जीवन में खास नहीं कर पाते और पुरुषार्थी आगे बढ़ जाता है। कर्मों अनुसार ही धारणा होती है या किसी को नहीं होती है, यह भी ड्रामा में नूँध है। यह भी राज़ है कि कभी किसी से मदद वा सहायता मिलती है और कभी न भी मिलती है यह भी कर्मोंनुसार ही है। इसलिए श्रेष्ठ कर्म ही करते रहना है।

प्रश्न 4का उत्तर :- यह तो सीधी सी बात है कि ठगी करते हैं। बाकी रही थोड़ी बहुत बोलने की कला होती है तो इसलिए अपने बोल द्वारा बाबा में भावना बिठाने की तो उस विशेषता के कारण वो इतना सुना पाते हैं। और कोई अच्छा सुनाने वाले होते हैं तो ऐसों की हिम्मत नहीं होती है, कोई कुछ नहीं कर रहा है या नहीं बोल रहा है इसलिए चलता है तो चलाते हैं और सब मानते भी है, मानते-मानते एक दिन मान्यवर भी हो जाते हैं तो प्रसिद्धि भी हो जाती है। लेकिन यह कोई वास्तव में असली प्राप्ति नहीं है। कुछेक ऐसी विशेषता होगी जो हमको नहीं देखने सुनने में है बाकी बड़ों को या ड्रामा को मालूम होगा जो ऐसे वो कर पा रहे हैं वरना ऐसा सभी से नहीं होता है।